# पंचम अध्याय

## "औपन्यासिक कला के आधार पर विवेच्य उपन्यासों का तुलनात्मक मूल्यांकन"

## पंचम अध्याय

# ''औपन्यासिक कला के आधार पर विवेच्य उपन्यासों का : तुलनात्मक मूल्यांकन''

### ❑ प्रास्तविक :-

गद्‌य की सभी विधाओं में उपन्यास सबसे सशक्त एवं श्रेष्ठ विधा है। उपन्यास में निरंतर विकास होता रहा है। उपन्यास के विकास के साथ शिल्प का भी विकास होता रहा है। हिन्दी 'शिल्प' के लिए अंग्रेजी में आर्ट, एक्स्प्रेशन, टेकनीक, क्राफ्ट आदि विभिन्न शब्द मिलते हैं। उपन्यास की शिल्पविधि उपन्यासकार के दृष्टिकोण पर निर्भर होती हैं। इस विषय में पर्सी ल्युबक्का का कथन यही है कि ''उपन्यास काल की शिल्पविधि अथवा कारीगरी की जटिलता का निर्धारण मूलत: कथाकार के दृष्टिकोण पर निर्भर है। कथाकार का कथा के साथ जो दृष्टि पात्र सम्बन्ध होता है, वही आखिर में उपन्यास में शिल्प निर्धारण करता है।''[1] स्पष्ट है कि, औपन्यासिक शिल्प का अपना महत्वपूर्ण स्थान हैं। इस विषय में हेनरी जेम्न ने लिखा है - ''वह समय बीत गया जब शिल्प को मात्र साधन माना जाता था, जिसके द्‌वारा अनुभूत सत्य को गठित कर अपने हित में ढाल दिया जाता था।''[2] उपन्यासों की कलात्मकता का अध्ययन जिन तत्वों के आधार पर किया जा सकता है वे इस प्रकार हैं -

### 5.1 'सूत्रधार' एवं 'महात्मा' का कथा शिल्प : तुलनात्मक विचार :-

संपूर्ण उपन्यास की कहानी जिन उपकरणों से मिलकर बनती है वह कथावस्तु कहलाती है। डॉ. त्रिभुवन सिंह के अनुसार ''उपन्यासकार को समस्या के आधार पर कहानी का निर्माण करना चाहिए, जिसमें मानव जीवन की समस्याओं की व्याख्या, प्रतिनिधित्व का संकेत जीवन की विविध कलाओं की झाँकी, मानव जीवन के विविध पक्षों का मूल्यांकन तथा अनुभूतियों की पूर्ण सफल अभिव्यक्ति निहित करना उसके लिए आवश्यक है।''[3] कहना सही होगा कि कथानक ही उपन्यास का मुख्य प्राण है।

---

1. पर्सि लुबोक : द क्राफ्ट ऑफ फिक्शन, पृष्ठ - 251
2. हेन्री जेम्स : टाईम ॲण्ड नॉव्हेल, पृष्ठ - 234
3. डॉ. त्रिभुवन सिंह : हिंदी उपन्यास - शिल्प और प्रयोग, पृष्ठ - 327

## सूत्रधार :-

हिंदी कथा साहित्य में संजीव एक ऐसे उपन्यासकार हैं जिन्होंने अपने उपन्यासों में नयी जमीन तलाशी है। इनके कलम ने शोषितों के पक्ष को बड़े उत्कृष्टता के साथ चित्रित किया है। प्रस्तुत उपन्यास 'सूत्रधार' जो भोजपुरी के प्रख्यात लोक कलाकार भिखारी ठाकुर पर केंद्रित है। यह एक तरह से उनके जीवन की कहानी है। यह उपन्यास सिर्फ एक लोक मंच के बेजोड़ कलाकार भिखारी ठाकुर की कहानी ही नही तो इसके जीवनाधार पर उस क्षेत्र के जातीय संस्कृति, इतिहास, साहित्य, कला शोषण, व्यंग्य, शोषण का बोध और निरूपायता अपने अस्तित्व की लड़ाई आदि सब कुछ है।

'नाई' जाति में पैदा हुए भिखारी को कड़कती धूप में भी गाँव-गाँव जाकर न्यौता देना पड़ता है। ऊपर से उपेक्षा अलग सहनी पडती है। अनपढ़ भिखारी रामानन्द सिंह के साथ झांकी में हिस्सा लेते हैं और इस कला में उनकी गहरी रूचि हो जाती है। अस्थायी से कुछ स्थायी करने की आकांक्षा से अपने दल की स्थापना वे करते हैं। पढ़ाई में रूचि लेकर अनपढ़ भिखारी अक्षर जोड़कर काव्यरचना करने लगते हैं। निम्नजाति का होने के कारण गाँव के गंवार अनपढ़ बबुआनों से लेकर पढ़े-लिखे तथाकथित शिक्षित बौद्धिक समाज से मिलनेवाली चोटों का संघर्ष ही उनका जीवन रहा। उनकी जाति उनकी प्रतिष्ठा में सबसे बड़ी बाधा बन गई) एक निम्न जाति में जन्म लेनी की पीड़ा भिखारी ठाकुर को बार-बार कौंचती है।

अनपढ़ होकर खुद का नाच गिरोह स्थापित किया। इसमें दल को लोकप्रिय ही नहीं बल्कि नौटंकी की अश्लीलता हटाकर परिष्कृत करने का संघर्ष भी था - तमाम प्रचलित स्वीकृत, अश्लीलताओं विकृतियों के बीच। भिखारी की शोहरत देश-विदेश पहुँची पर हिंदू-जाति व्यवस्था के तहत ऊँची जातियों ने आखिर तक यह एहसास कराया कि वे 'जाति के नाई ही हैं।'

एक तरफ अभिव्यक्ति की बेकली, अपने सामाजिक व मानसिक दायरे से बाहर निकलने की जिद और दूसरी तरफ बार-बार, कदम-दर-कदम, गाँव-दर-गाँव,

शहर-दर-शहर दिलाया जानेवाला और मन पर हथौडे की तरह चोट करनेवाले शब्दबाण कि, 'ठीक है अच्छा नाच-गा लिया, अब जरा हजामत तो बना दो'। इस तरह पग-पग भिखारी ठाकुर को मिला लांछन, तिरस्कार और घुटन।

अपनी इस लाचार और परवश जिन्दगी से छूटने और आसमान छूने की ललक, जात-पात से बाहर, समरस-पारदर्शी समाज रचने की आकांक्षा, यही उनका सपना और बड़ी जातिवाले लोगों की नजरों में अक्षम्य अपराध था। इस अपराध की बड़ी कीमत भी उन्होंने चुकाई, प्रियजनों का मित्रों का असह्य बिछोह उन्होंने झेला। इस सबसे स्वयं टूटे लेकिन समाज के दर्प और खोखले अहंकार को भी तोड़ा।

उपन्यास के अंत में लोक रंजकता के गहरे मूल्यबोध भी है। उजली नदी के समान भिखारी ने सारा सुन्दर-असुन्दर, पवित्र-अपवित्र अपने में समेट लिया था। न सिर्फ भिखारी की बल्कि हमारे समाज और इतिहास की बहुविध विड़ंबनाएं यहाँ प्रस्तुत की है। उपन्यास सिर्फ भिखारी ठाकुर ही नहीं तो उनके समकालीन अन्य भोजुपरी लोक कलाकारों, महेंद्रर मिसिर, चांदीसिंह आदि को भी पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करता हैं। भिखारी ठाकुर जैसे दुखों से छालनी हो आए मुंह दूबर आदमी की कथा यहाँ प्रस्तुत की है। अपने तमाम शिखरारोहण के बावजूद भिखारी अंत तक भिखारी ही बने रहें।

'सूत्रधार' इस प्रकार एक अत्यंत प्रभावात्पादक तथा महान चरित्र प्रधान कृति है। उपन्यास में भोजपुरी भाषा का प्रयोग अत्यंत प्रासंगिक बन पड़ा है। कुछ स्थलों पर अनावश्यक वर्णनात्मकता आयी है।

**कथाशिल्प : (महात्मा) :-**

डॉ. रवींद्र ठाकुर द्वारा लिखित 'महात्मा' महात्मा जोतिराव फुले पर केंद्रित चरित्रप्रधान उपन्यास। इस उपन्यास में फुलें के समग्र विचारों, सर्वस्पर्शी व्यक्तित्व और कुल मिलाकर उनके जीवनकार्य को ही यहाँ चरित कहानी के द्वारा प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास का अब तक बंगाली, गुजराती आदि भाषाओं में अनुवाद संपन्न हुआ है। उपन्यास कुल चार भागों में और 101 प्रकरणों में प्रस्तुत है जिसमें कुल 189 पात्र हैं।

उपन्यास का प्रारंभ स्कूल की घंटी बजने पर क्लास से बाहर आनेवाले जोति से होती है जो टॉमस पेन के विचारों से प्रभावित है और उन्हीं विचारों को मन में दुहराता हुआ आगे बढता है। मुख्य कथा जोतिराव फुलें के संपूर्ण चरित्र को उद्घाटित करती है जिसमें स्त्री शिक्षा का उन्होंने किया कार्य, विधवा विवाह के लिए किए प्रयास अस्पृश्यता निवारण के लिए किया कार्य, बालकहत्या प्रतिबंधकगृह की स्थापना, सत्यशोधक समाज की स्थापना, उसी के साथ एक पत्रकार, एक कवि एक लेखक होने का अपना दायित्व और अंत में इसी परिस्थिति से जूझतें हुए जीवन का अंत आदि पूरी जीवनगाथा यहाँ लेखक ने प्रस्तुत की है।

अंग्रेजों का राज निकाल देने के पागलपन को रुकवावर दलितों के बच्चों के लिए स्कूल खुलवाना, बहुत-से ग्रंथों का लेखन, अनाथ बालकाश्रम की स्थापना, विधवाओंका पुनर्विवाह, शिवाजी महाराज के समाधी का शोध, सत्यशोधक समाज की स्थापना, पूना कमर्शियल अॅन्ड कॉंट्रक्टिंग कंपनी की स्थापना, 'सत्यार' इस नियतकालिका का प्रकाशन, किसान आंदोलन, मराठी ग्रंथकार सभा में किया हुआ अपना मतप्रदर्शन, अकालग्रस्तों के लिए की हुई मदूद और उनके लिए स्थापित किया हुआ 'व्हिक्टोरिया बालकाश्रम', इंग्लैंड के राजपुत्र ड्युक ऑफ कॅनॉट से मुलाकात, महाराजा सयाजीराव गायकवाड ने किया। अभिवादन, बीमारी की स्थिति में भी सार्वजनिक सत्यधर्म इस ग्रंथ का किया लेखन ऐसे नानाविध प्रसंगों के साथ महात्मा जोतिराव फुले का चरित्र यहाँ प्रस्तुत होता है।

लेखक ने यहाँ 19 वीं सदीं के सामाजिक धार्मिक, समग्रकालपट को खड़ा किया है। तत्कालीन पुना शहर, वहाँ की सनातन मानसिकता और इसी पृष्ठभूमि पर फुले ने किया हुआ अपना सामाजिक कार्य इसके लिए उन्हें समाज की प्रताड़नाओं, विरोध, अत्याचार को सहना पड़ा था। इस सबके साथ फुलें के विचारों का निरालापन, पारिवारिक तथा सामाजिक दृष्टि से घटे प्रसंग उन सभीं प्रसंगों के माध्यम से पाठकों के सामने 19 वीं सदी का ऐतिहासिक पट खुलता जाता है।

उपन्यास के अंत में फुले के जीवन का विकास क्रम चित्रित करते समय उनके एक मनुष्य होने का भी सहज अंकन होता है। इसी के साथ किसप्रकार एक आम व्यक्ति का विकास होता गया और वह 'महात्मा' के पद तक पहुँचा इसका अत्यंत मर्मस्पर्शी, सजीव यथार्थ अंकन उपन्यास कार ने यहाँ किया है। समाज के स्थिति से लड़ते-लड़ते आखिर में फुले जी का मृत्यु उपन्यास को अधिक हृदयग्राही बना देता है।

स्पष्ट है कि प्रस्तुत उपन्यास जोतिराव फुले के समग्र व्यक्तित्व को प्रस्तुत करने में अत्यंत सफल साबित हुआ है।

## 5.2 'सूत्रधार' एवं 'महात्मा' का चरित्र-चित्रण शिल्प : तुलनात्मक विचार :-

मनुष्य के वास्तविक जीवन में घटित घटनाओं, भाव-भावनाओं एवं समसामायिक समस्याओं का जितना यथार्थ अंकन उपन्यास में होता है उतना किसी अन्य विधा में नही। यही कारण है कि साहित्य को समाज का दर्पण कहलाया जाता है तो उपन्यास को मनुष्यजीवन का। उपन्यास में कथा की तहर चरित्रचित्रण का भी विशेष महत्व हैं। उपन्यास के पात्र जितने स्वतंत्र, सशक्त, प्राणवान, वास्तविक होते है उतने ही वे पाठक के संदर्भ में संवेदना जागृत करने मे सक्षम होते है। इस संदर्भ प्रेमचंद के विचार उचित है, ''उपन्यास के चरित्रों का चित्रण जितने ही स्पष्ट गहरा और विकासपूर्ण होंगा उतना ही पढ़नेवालों पर उसका असर पड़ेगा और यह लेखक की रचनाशक्ति पर निर्भर है।''[1] ऐसे चरित्र निर्माण के लिए उपन्यासकार के पास उच्चकोटि की लेखकीय प्रतिभा, व्यापक जीवनानुभव, समसामायिक समस्याओंका ज्ञान तथा मानव मन के सूक्ष्म अध्ययन की जरुरत होती है।

### 5.2.1 'सूत्रधार' -

संजीव लिखित 'सूत्रधार' एक चरित्र प्रधान उपन्यास है। इस उपन्यास के प्रमुख पात्र भिखारी ठाकुर जिन्होंने अपने अंचलों की संस्कृति बनाई, जन-जीवन में विभिन्न रसों का संचार किया। जिन्होंने भोजपुरी में नाटक लिखे, नाट्य-मंडली बनाई, नाटक खेले, अभिनय किया और अपने समय के जीवन में रस का संचार किया। उपन्यास के

---

1. प्रेमचंद : साहित्य का उद्‌देश्य, पृष्ठ - 72

मुख्य पात्र भिखारी ठाकुर ही है। इसके साथ अन्य गौण पात्रों में मनतुरवादेवी, बाबूलाल, रामानन्दसिंह, दलसिंगार ठाकुर, शिवकलीदेवी, महेंदर मिसिर, चांदीसिंह, सुनरसन लच्छनराय, मिर्चइया बाबा, लालू, सोमारु, शीलानाथ आदि अनेक पात्र दिखाई देते हैं। प्रत्येक पात्र में व्यवहार और आदर्श में मौलिकता दिखाई देती है। भोजपुरी समाज जीवन को यहाँ बखुभी से प्रस्तुत किया है।

### 5.2.2 भिखारी ठाकुर का चरित्र-चित्रण -

'सूत्रधार' के भिखारी ठाकुर की चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं -

#### 1 स्वाभिमानी व्यक्तित्व के रूप में चित्रण :-

संजीव ने 'सूत्रधार' में भिखारी ठाकुर का चरित्र प्रस्तुत किया है। जाति के 'नाई' भिखारी बचपन से अवहेलित जीवन जीते रहे। लेकिन इसके बावजूद उनके स्वाभिमानी व्यक्तित्व के अनेक स्थलों पर दर्शन होते हैं। अपने मन में हमेशा से 'व्यास' बनने का सपना देखनेवाले भिखारी अंगरहित यादव के गिरोह में वहाँ की अश्लीलता से उठकर निकल पडते हैं और अलग से अपना दल बनवाते हैं। उनके व्यक्तित्व की स्वाभिमान की झलक यहाँ दिखाई देती है।

#### 2 सामाजिक परिवर्तन हेतु समता के लिए प्रयत्नशील :-

भिखारी ठाकुर अपने नाच साहित्य काव्य के द्वारा समाजपरिवर्तन की आंकाक्षा रखी। जैसे-जैसे भिखारी ठाकुर की लोकप्रियता बढ़ती गई वैसे-वैसे उनके एक इशारे पर लाखों की भीड़ समाजपरिवर्तन को अत्यंत सहजता के साथ अपनाती। समाज में फैली जातिभेद की मानसिकता मिट जाए और पूरा समाज एक हो जाए यह भिखारी आकांक्षा थी। भिखारी न सिर्फ लोककलाकार थे तो सामाजित परिवर्तन के साथ समता के लिए प्रयत्नशील भी थे।

#### 3 संवेदनशील कवि :-

भिखारी ने के हर स्तर के लोगों की पीड़ा को काव्य के माध्यम से प्रस्तुत

किया। 'बिदेसिया', 'गंगास्नान', 'गबरघिचोर' जैसी उनकी रचनाएँ इसी प्रकार की थी। जहाँपर समाज के दीन-हीन, पतित लोगों के दु:खों का मर्म उन्होंने उतार दिया था। जैसे -

"धोबी घर-घर नरक बिटोरत, धोई साफ करि देता
घास बिना फसील सोभित है जिनि किसान के खेत।"[1]

इस प्रकार उनका संवेदनशील लेखक, कवि का व्यक्तित्व यहाँ उभरता है।

**4 प्रगतिशील विचारों के रूप में :-**

तत्कालीन समय में जहाँ एक तरफ विद्रोह के अवसाद और ब्रिटीश शासन था तो दूसरी ओर स्वाधीनता आन्दोलन, सामाजिक नवजागरण तो पराभव, नवोन्मेष, संक्रमण आदि की स्थिति। ऐसे में समाज में जहाँ लोग एक-दूसरे के प्रतिघृणा करते थे, सामाजिक विषमता की हर वह दीवार ऊँची थी। ऐसे में समाज के निम्नजाति, किसान स्त्री की स्थिति भी उतनी ही करुणापुर्ण थी। ऐसे करुणापुर्ण समाज में ही भिखारी ठाकुर ने अपने प्रगतिशील विचारों को प्रस्तुत किया। 'बेटीवियोग' द्वारा स्त्रियों में जागृति उत्पन्न की। स्त्रियों को भी अपना जीवन जीने का अधिकार है यह बात उन्होंने प्रस्तुत की।

**5 आदर्श विचारों के पुरस्कर्ता रूप में चित्रित :-**

भिखारी ठाकुर हमेशा से आदर्श विचारों के पुरस्कर्ता रहें। परंपरागत रुढियों, वर्णभेद के बंधनो से वे घृणा करते थे। जीवनभर अखंड़ संघर्ष सहते हुए उन्होंने आदर्श विचारों को अपने साहित्य तथा नाच के प्रदर्शन द्वारा प्रस्तुत किया और प्रस्तुत करने के बाद वह गीत समाज का माना। जैसे - "तनी समझने की कोशिश करो, गीत अब हमरा रहा ही कहाँ। लिख देने के बाद तो वह सभसे समाज का हो गया। हर आदमी में उसकी जिनगी की तरंग, दु:ख तकलीफ में जो गीत पनपा, फरा-फुलाया, गम-गम गमका, वह उसकी आतमा का हुलास या विलाप है, हम और तुम इसको रोकनेवाले कौन हैं ?"[2] इस प्रकार उनके आदर्श विचार यहाँ प्रस्तुत होते हैं।

---

1. संजीव : सूत्रधार, पृष्ठ - 57
2. वही, पृष्ठ - 293

## 5.2.3 पात्र तथा चरित्र-चित्रण : महात्मा :-

डॉ. रवींद्र ठाकुर ने 'महात्मा' उपन्यास में मुख्य या प्रधान पात्र, गौणपात्र तथा सहायक पात्रों का चित्रण किया है। इस उपन्यास में मुख्य या प्रधान पात्र के रूप में महात्मा जोतिराव फुलें का चरित्र आता है। गौणपात्र के रूप में सावित्रीबाई फुले, आऊ, गोविंदराव, सदाशिवराव, मोरोपंत, सखाराम, वासुदेव, उस्मानशेख, गफूरचाचा, शार्हीर धोंडीराम डॉ. मरेमिचेल, तात्यासाहेब भिडे, मेजर कॅडी, रावसाहेब आदि अनेक पात्रों का चित्रण गौण रूप में में दिखाई देता हैं।

### महात्मा जोतिराव फुले का चरित्र-चित्रण -

'महात्मा' उपन्यास के प्रमुख पात्र महात्मा जोतिराव फुले की चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं -

### 1 ध्येय से संप्रेरित व्यक्तित्व -

महात्मा जोतिराव फुले के विचारों पर मानव की प्रतिष्ठा, गुलामी से मुक्ति, व्यक्ति स्वाधीनता आदि पेन के विचारों का प्रभाव था। राजनीतिक स्वतंत्रता के बाद फिर से पेशवों की गुलामी उन्हें पसंद नहीं थी। सबसे अधिक वे व्यक्तित्व स्वाधीनता' को महत्वपूर्ण मानते थे और इसके लिए व्यक्ति के अस्तित्व को झकझोरना होंगा ऐसा उनका मानना था। इन्हीं विचारों से वे अपना ध्येय निश्चित कर देते हैं। जिसमें पूरे समाज के परिवर्तन की चाह थी, बच्चों को शिक्षित कराना, स्त्री शिक्षा को महत्व देना आदि मुख्य बातें थी। सिर्फ ध्येय निश्चित ही नहीं किया तो इसे पूरा करने का पूरा प्रयास भी किया। सन् 1948 में भिड़े की हवेली में पहला स्त्रियाँ का स्कूल खुलवाया।

### 2 स्वतंत्र विचारशक्ति वाला व्यक्तित्व :-

समाज की स्वाधीनता, जातिभेद, अव्यवस्था, शोषकों से दलितों पर होनेवाला अन्याय आदि के प्रति फुलें के विचार परंपरा को तोड़नेवाले थे। स्त्री के प्रति उनके विचार प्रगतिशील थे। स्त्रियों पर समाज में हो रहें अन्याय-अत्याचार के खिलाफ उन्होंने अपनी आवाज बुलंद की। विधवाओं के पुनर्विवाह के लिए प्रयास किए। स्त्री के

उन्नति के लिए हर संभव प्रयास करने की उनकी लालसा थी। इस प्रकार उनकी स्वतंत्र विचारशक्ति यहाँ स्पष्ट होती है।

### 3 आदर्श विचारों के पुरस्कर्ता :-

समाज की तत्कालीन स्थिति देखकर जोतिराव फुलें को हमेशा से लगता कि पहले सामाजिक बंधनों को नष्ट करना चाहिए और फिर राजनैतिक क्रांति फैलानी चाहिए। स्त्री शिक्षा के बारे में उनके विचार इस प्रकार थे, ''शिक्षण घेणं हे काही पाप नाही, सावित्री, आऊ, दादा यांनीच मला शिकवलं ना ? मग तू त्यांची भीती का बाळगतेस ? लोक नांव ठेवतील, म्हणून भीती वाटते का ? ते नांव ठेवणार, हे अपेक्षितच आहे. कारण ते अज्ञानात आहे. त्यांना काय वाटेल यापेक्षा आपल्याला काय योग्य वाटतं, हेच आज महत्वाचं आहे.''[1] (शिक्षा लेना यह पान नही, सावित्री। आऊ, दादा उन्होंने ही मुझे पढ़ाया है ना ? फिर तुम किस बात से डरती हो ? कुछ भी कहेंगे, इस बात से डरती हो ? वो तो, कुछ भी कहेंगे ही, यह निश्चित है, क्योंकि वे अज्ञानी है। एक दिन उन्हें भी स्त्री शिक्षा का महत्त्व समज में आएगा, उन्हें क्या लगता है, इससे पहले खुद को योग्य लगता है, यही आज महत्त्वपूर्ण है।) इस प्रकार उनके आदर्श विचार थे।

### 4 कार्यतत्परता :-

समाज परिवर्तन की राह फुलें ने जब पकड़ ली तब समाज के ठेकेदारों का हर प्रकार का कड़ा विरोध उन्हें सहन करना पड़ा। उनके हर कार्य में इन लोगों ने बाधा डाली लेकिन आनेवाली हर मुसीबत का डट्कर मुकाबला कर फुलें अपने कार्य को सकुशलता से पूरा करत देते। इस प्रकार उनमें कार्यतत्परता का गुण विद्‌यमान था।

### 5 क्रांतिकारी व्यक्तित्व :-

समाज में निम्न जाति पर उच्चजाति द्‌वारा होनेवाला अन्याय-अत्याचार देखकर जोतिराव तिलमिला उठते। जातिभेद को बढ़ावा देनेवाले वेदों के प्रति उनके मन में तीव्र घृणा थी। इस सबका वे विरोध करते। समाज के ऐसी अनेक कुप्रथाओं के प्रति उनके मन में तीव्र आक्रोश था।

---

1. डॉ. रवींद्र ठाकुर : महात्मा पृष्ठ - 36

इस प्रकार महात्मा जोतिराव फुले के चरित्र की कई विशेषताएँ यहाँ दृष्टिगोचर होती हैं।

## 5.3 'सूत्रधार' एवं 'महात्मा'का संवाद शिल्प : तुलनात्मक विचार :

किसी भी सशक्त औपन्यासिक कृति के सजीव पात्र कथा-प्रसंगों को गति प्रदान करने के लिए जो परस्पर वार्तालाप या विचार-विनिमय करते हैं इसे 'संवाद' या 'कथोपकथन' की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। उपन्यास की जीवंतता, प्राणवत्ता बहुत कुछ सार्थक एवं सोद्देश्य कथोपकथनों पर निर्भर रहती है। प्रेमचन्द जी ने कथोपकथन के गुणों की ओर संकेत किया है - "उपन्यास में वार्तालाप जितना अधिक हो, उतना ही उपन्यास सुन्दर होंगा। वार्तालाप केवल रस्मी नहीं होना चाहिए। प्रत्येक वाक्य को-जो किसी चरित्र के मुँह से निकले - उसके मनोभवों और चरित्र पर कुछ-न-कुछ प्रकाश डालना चाहिए। बातचीत का स्वाभाविक परिस्थितियों के अनुकूल सरल और सूक्ष्म होना जरूरी हैं।"[1] सारतः संवाद कथानक या चरित्र-चित्रण की भाँति उपन्यास का अपरिहार्य तत्व है और ऐसा तत्व है जो रचनाकार की अनेक समस्याओं का समाधान करता है तथा अपनी संक्षिप्तता, मौलिकता, सोद्देश्यता और मनोनुकूलता आदि विशेषताओं से समन्वित होकर अपनी उपयुक्तता सिद्ध करता हैं।

### 5.3.1 'सूत्रधार' की संवाद योजना -

प्रस्तुत उपन्यास में गंभीर, रोचक, छोटे-बडे, विषयानुकूल, पात्रानुकूल, उद्देश्य पूर्ति में सहायक, स्वाभाविक, उपयुक्त, रोचक, हृदय को कचोट देनेवाले, चरित्रोद्घाटन करनेवाले, हास्य-विनोदपूर्ण संवाद मिलते हैं।

#### 5.3.1.1 पात्रानुकूल :-

चरित्रप्रधान उपन्यास होने के कारण इस में भिखारी ठाकुर के जीवन में बचपन में की हुई अवहेलना का यथार्थ अंकन आया है, जैसे - "नउवा"

"नउवा ... ? ई. हो पढ़ेगा ? पढ़-लिख के ते का करेगा रे ?"

---

1. प्रेमचंद : कुछ विचार, पृष्ठ - 102

"नौवा-कौवा बार, बार बनौवा ?" और तरह-तरह की अश्लील टिप्पणियाँ।

"हजायत के बनाई ?"

"नहरनी ले ले बड़े रे, तनि नह काट दे।" तरह-तरह की बोलियाँ-जैसे आदमी के बच्चे के रूप में वे पशुओं के बच्चे थे।"[1]

**5.3.1.2 स्वाभाविकता -**

उपन्यास में कथोपकथन का समावेश अत्यंत स्वाभाविक बन पड़ा है। जैसे -

"आपको ब्राह्मण नहीं भेटाया जो नाई के लड़के से जगशाला भरस्ट करवा रहे हैं ?"

"ई नाऊ हैं ?"

"तब का ..."

"जावो बच्चा दूसरा काम देखो। एक बात सुन लो, जात मत छिपाना, पाप लगेगा।"[2]

**5.3.1.3 हास्य-व्यंग्यपूर्ण :-**

उपन्यास में हास्य-व्यंग्यपूर्ण संवादों को भी प्रस्तुत किया है। जैसे -

"नाचना तो नहीं आता, बाकी ..." अटकने लगे भिखारी

"बच गए।" किसी बगल में बैठे हुए आदमी ने कहा, "वरना साक्षात ताड़का या पूतना जैसे लगते।"

अंगरहित यादव हँस पडे, "कभी नाच-वाच में काम किया हैं ?"

"नाच में तो ना ..."

"और 'वाच ...?" उसी आदमी ने कहा तो खिल्ली उड़ गई। भिखारी के बदन पर चींटियाँ रेंगने लगीं।"[3]

---

1. संजीव : सूत्रधार, पृष्ठ - 17
2. वही, पृष्ठ - 22
3. वही, पृष्ठ - 58

### 5.3.1.4 रोचक :-

'सूत्रधार' में कुछ संवाद हृदय को कचोटने वाले भी हैं। इससे रोचकता अधिक बढती है, जिसे -

"आजी तो ...?" खड़े-खड़े सुसुक उठता है राजेन्दर।

"कब ...?" पूछते बाबूलाल

"रतिये में।"

"कैसे ?"

"हैजा फैलल न बा गाँव में।"

"दवाई।"

"जो सपरा (संभव हुआ) सब कराया गया। परसों बीमार पडी, कल रात चटपट में खतम।"[1]

इस प्रकार 'सूत्रधार' में प्रयुक्त संवादों में वैविध्यता दिखाई देती हैं। संवादों की सफलता का श्रेय संजीव को यहाँ जाता है।

### 5.3.2 'महात्मा' का संवाद शिल्प -

प्रस्तुत उपन्यास 'महात्मा' में भी लेखक डॉ. रवींद्र ठाकुर ने उपयुक्त, अनुकूल, सम्बद्ध, स्वाभाविक, संक्षिप्त, हास्य-व्यंग्यपूर्ण, चरित्रोद्घाटन करनेवाले, रोचक, हृदय को कचोटनेवाले संवाद प्रस्तुत किए हैं। जैसे -

### 5.3.2.1 संक्षिप्तता :-

'महात्मा' में संक्षिप्त संवाद प्रस्तुत हुए है, जैसे -

"आऊ, तू का हसतेस ?" जोती म्हणाला.

"उगीच"

"तू उगीच हसणार नाहीस."

"हसू आलं, ते याचं की तिकडं बामणांनी तुझा विटाळ झाला म्हणून

---

1. संजीव : सूत्रधार, पृष्ठ - 237

अंघोळ केली असंल आणि इकडं त्यांच्या धर्माच्या नावानं तूही अंघोळ केलीस. म्हणजे दोघांच्या मनांतला विटाळ गेलाच न्हाई.''[1]

''जाऊ दे आऊ, रागानं बोललो मी ते.'' जो ती हसून म्हणाला.

(''आऊ, तुम क्यों हँस रही हो ?'' जोति ने कहा.

''ऐसे ही''

''तुमच ऐसे ही हँसनेवाली नहीं हो।''

''हँसी आयी, तो इसकी, कि उधर ब्राह्मणोंने तुम्हारी अस्पृश्यता के कारण स्नान किया होंगा और इधर तुमने उनके धर्म के नाम पर स्नान किया। याने दोनों के मन में फैली अपवित्रता गई ही नहीं।'')

उपन्यास में उद्देश्य में उद्देश्यपूर्ण संवादों की रचना भी की हुई है। साथ में अर्थपूर्ण संवाद भी हैं।

**5.3.2.2 रोचकता -**

प्रस्तुत उपन्यास में हृदय को कचोटनेवाले संवाद भी आए जिससे रोचकता और बढ़ती है, जैसे -

''कोण होतं सावित्रीबाई !'' तात्यांनी विचारलं.

''यशवंताची आई त्याला पाहायला आली होती.''

''तुम्ही मला का उठवत नाही ? असं अपरात्री दार उघडणं धोक्याचं आहे.''

''तिच्या येण्याची वेळ मला माहीत असते.''

''ते खंर ... पण''

''बायकांची दुखणी बायकांनाच कळायची, शेटजी'' कांकूनी दुःखद सुस्कार टाकला. ''तिचं अन्नपाणी सुटलं आहे. पोराला पाहून ती जगते आहे. त्यात तिला क्षय झाला आहे.'' तात्या चरकले.

---

1. डॉ. रवींद्र ठाकुर : महात्मा, पृष्ठ - 24

"अशानं ..."

"ती फार दिवस जगेल, असं वाटत नाही. भावाकडं जाणं शक्य नाही आणि इथं राहावं, तर जगणं कठीण, अशी अवस्था झाली आहे. त्यांना हे पाप घरात नकोसं झालं आहे..."[1]

("कौन था सावित्रीबाई" तात्यांजी ने पूछा।

"यशवंत की मां. उसे देखने आयी थी"

"तुमने मुझे जगाया नहीं ! ऐसे आधी रात दरवाजा खोलना खतरे से खाली नहीं।"

"उसके आने का समय मुझे मालुम होता है।"

"वो ठीक है... लेकिन"

"औरत का दुःख औरत ही जानेगी, शेटजी" काकू दुःखी स्वर में कहती है। "उसका खाना-पिना छूट गया।

बच्चे को देखकर जीती है। उसमें ही उसे क्षय हो गया हैं"

तात्या घबराए। "इससे तो ..."

"वह ज्यादा दिन जिएंगी नही, भाई के पास जाना असंभव है और यहाँ रहना है तो जीना मुश्किल, ऐसी स्थिति है उसकी। उन्हें यह पाप घर में नहीं चाहिए।")

इस प्रकार उपन्यास में रोचक, संक्षिप्त, हास्य-व्यंग्यपूर्ण संवाद आए है जिससे प्रस्तुत उपन्यास की कथा तथा पात्रों का पूरा विकास हो गया है।

## 5.4 'सूत्रधार' एवं 'महात्मा' का देश-काल वातावरण शिल्प : तुलनात्मक विचार :

उपन्यास की विविध घटनाओं, उसके विविध पात्रों तथा उनके क्रिया-कलापों और विभिन्न परिस्थितियों में उनकी प्रतिक्रियाओं को एक पाठक तब सम्भावित या किसी सीमा तक यथार्थ समझता है जब वह देखे कि, उसकी पृष्ठभूमि किस सीमा तक देशकाल का सही वातावरण अथवा देशकाल के अन्तर्गत सामान्यतया किसी भी देश

---

1. डॉ. रवींद्र ठाकुर : महात्मा, पृष्ठ - 219

समाज अथवा वर्ग विशेष की समाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक परिस्थितियाँ, आचार-विचार रीति-रिवाज, रहन-सहन, परम्परागत विशिष्टताएँ तथा कुरीतियाँ आदि परिगणित की जाती है। उपन्यास के तत्वों में देश और काल का विवेचन करते हुए डॉ. श्यामसुन्दर दास ने लिखा है - ''उपन्यास के देश और काल से हमारा तात्पर्य उसमें वर्णित आचार-विचार, रहन-सहन और परिस्थिति आदि से है। इसे हम दो भागों में विभक्त कर सकते हैं - एक तो सामाजिक और दूसरा ऐतिहासिक या सांसारिक। ... बहुत से उपन्यास आदि से केवल इसीलिए मनोरंजक होते है कि उनमें किसी विशिष्ट वर्ग, देश के किसी विशिष्ट भाग अथवा काल के किसी विशिष्ट अंश से संबंध रखनेवाला ही वर्णन होता है। ऐसी दशा में जिस उपन्यास का वर्णन जितना ही सटीक और स्वाभाविक होंगा, वह उपन्यास उतना ही अच्छा माना जाएगा।''[1] इस प्रकरण उपन्यास में देशकाल वातावरण का अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है।

### 5.4.1 'सूत्रधार' में चित्रित देशकाल वातावरण -

देश, काल, पात्र की जीवित जागृत पृष्ठभूमि पर रचा गया जीवनीपरक उपन्यास 'सूत्रधार' में भोजपुरी समाज में बसे लोकराग को व्यक्त किया है। उपन्यास में 19 वीं सदीं के अंतिम तीन दशक से लेकर 20 वीं सदीं के सातवे दशक तक का वर्णन हैं। बिहार के कुतुबपुर, चन्ननपुर, कलकत्ता, आसाम, मुजफरपुर, खड्गपुर, सिवान आदि प्रदेशों का वर्णन आया हैं। 'सूत्रधार' भिखारी ठाकुर की कथा करने के बहाने तत्कालीक सामंती सामाजिक व्यवस्था की गहरी पड़ताल करता है। पूर्वी उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बिहार का बहुत बड़ा भू-भाग इसमें वर्णित किया हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में तत्कालीन समसामायिक स्थितियों खासतौर पर अंग्रेजों की आंतक भरी शासनपद्धति, सामंतों की स्वार्थान्धता, निम्न वर्ग का हो रहा शोषण, स्त्री का समाज में हो रही दुर्दशा, उच्चवर्ग का अत्याचार, लोक कलाकारों की ओर समाज का देखने का अंदाज, स्वाधीनता का आंदोलन, अकाल की भयंकर स्थिति, सन् 1943 मे आए भीषण बाढ़ का वर्णन आदि बातें अत्यंत सहजता के साथ प्रस्तुत हुई हैं जिससे पाठक को उस परिस्थिति का स्वयं अनुभव होता है।

---

1. प्रतापनारायण टंडन : हिंदी उपन्यास में कथा-साहित्य का विकास, पृष्ठ - 87

उस समय गाँव में जातिभेद की मानसिकता अत्यंत कठोर थी। गाँव में एक ही कुआँ होने से उसी कुएँ से सारा गाँव पानी भरता। यहाँ की वर्णव्यवस्था का वर्णन उपन्यास में आया है, ''तह-दर-तह वर्णव्यवस्था यहाँ भी लागू थी - पहले बाबा जी लोग पानी भरते, फिर बाबू साहब लोग फिर वे जातियाँ, जिनका छुआ चलता था, तब बारी आती कौमीनों (अस्पृश्य नीची जातिवालों) की। उनके घर की औरतें गगरी-गगरा लेकर बैठी रहती। जरुरतमन्द घिरौरी-मिनतीकर किसी से माँग लेते, एक अनार और सौ बीमार। बख्त-जरूरत पर गंगा जी तो थी ही, अलबत्ता तनिक दूर। गंगा जी का पानी ज्यादातर नहाने, धोने और पशुओं के नहलाने के काम आता या फिर आखिरी बेला में मुँह में डालने के काम। पीने का पानी पंडित जी के कुएँ से ही आता।''[1] जब सन् 1946 में गाँव में हैजा फैला तो मनतुरदेवी की मौत उसी में हो गई। इस प्रकार यहाँ उस वक्त में समाज में वर्णव्यवस्था की व्याधि फैली हुई थी इसका यथार्थ अंकन संजीव ने 'सूत्रधार' में किया है।

भिखारी दल के प्रदर्शन के लिए आसाम एक गए थे। जहाँ 'बेटी वियोग' का प्रदर्शन सफल नहीं रहा। वहाँ मुनीमराय साहब ने बताया, ''बेटी बेचने की समस्या उस रूप में यहाँ नहीं है, जो है वह धरम-करम से जुड़ी हुई है। यहाँ से आगे पूरब बढ़ते जाइए तो वहाँ बेटी ही बेटे को बियाह करके घर ले आती है, वहीं घर-दुआर, दुकानदौरी संभालती है। मरद तो दारु पीकर घुलटे रहते है।''[2] इस प्रकार बिहार, यु.पी. में जो बड़ी समस्या थी बेटी बेचने की वह आसाम में नहीं थी। इस तरह देशकाल में अंतर था।

'सूत्रधार' में राजकीय स्थिति का वर्णन भी आया है। जैसे कलकत्ते शहर में अंग्रेजों की संख्या अधिक थी , ''खड़गपुर में बहुत अंगरेज है, लेकिन कलकत्ते में तो इनका बाजार लगा रहता है। ये अंगरेज लोग बंगाली-बिहारी में वैसे ही ही घिना करते हैं जैसे बराहमन और राजपूत नान्ह जाति से करते हैं।''[3] इस प्रकार सामाजिक, राजनीतिक स्थिति तत्कालीन समय के अनुरूप थी इसका अंकन 'सूत्रधार' में होता है।

---

1. संजीव : सूत्रधार, पृष्ठ - 236
2. वही, पृष्ठ - 250
3. वही, पृष्ठ - 37

## 5.4.2 'महात्मा' में चित्रित देशकाल वातावरण -

'महात्मा' उपन्यास महात्मा जोतिराव फुलें पर केंद्रित हैं। इसमें 19 वीं सदी के पहले दशक से लेकर नौवें दशक का वर्णन आया हैं। केंद्र में है महाराष्ट्र का 'पुना शहर'। 'महात्मा' में वर्णित राजनैतिक स्थिति के अंतर्गत स्वाधीनता आंदोलन के समय का वर्णन, 1857 के राज्यक्रांति का वर्णन आया हैं।

सामाजिक वातावरण में समाज में सामाजिक बंधन तथा रीतिरिवाजों का अधिक बोलबाला था। ऐसे में समाज में विधवाओं की स्थिति अत्यंत करूणापूर्ण थी। जैसे एक घटना - "एकदा कोणी राधाबाई नावाची दुर्देवी स्त्री पेटत्या चितेतून बाहेर पडून गावाकडे पळत आली होती. तिला गावात शिरलेलं पाहतच ब्राह्मणांना अपशकुनाचे भास झाले. सती गेलेली स्त्री चितेवरून उठून पटत आली, म्हणून गावावर म्हणे, संकट कोसळणार होतं. कोणी तिचं तोंड पाहिलं नाही की, तिला कोणी घरातही घेतलं नाही. गोऱ्या शिपायांनी तिच्यावर उपचार केले. परंतु ब्राह्मणांना तिची दया आली नाही. तिसऱ्या दिवशी बिचारी मरण पावली।"[1] (एक बार राधाबाई नाम की कोई टाक बेचारी स्त्री जलती चिता से बाहर आकर गाँव में भाग गई। उसे गाँव में आते देखकर ब्राह्मणों को अपशकून के आभास हो गए। जौहर गई स्त्री अगर जलती चिता से बाहर आ गई तो गाँव पर कोई भारी आफत आ जाएंगी ऐसा उनका मानना था। किसी ने उसके मुँह को नही देखा, की घर में भी घुसने नहीं दिया। गोरे सिपाईयोंने उस पर उपचार किए। लेकिन ब्राह्मणों को उसकी दया नहीं आयी। तीसरे दिन ही बेचारी की मौत हुई।" इस प्रकार उस समय सामाजिक वातावरण में स्त्रियों की दुर्गति का यथार्थ अंकन हुआ है। जाति-पाति की कट्टरता का वर्णन भी उपन्यास में आया है। जैसे - "त्यांना जुलुम करायला पेशवाईच कशाला पाहिजे? नुसता सावलीचा विटाळ झाला म्हणून ते अजून गुलटेकडीच्या मैदानात माणसांना हालहाल करुन मारायचे. त्यांच्या वाट्याला जाऊ नको. जो ती त्यांनी तुला सुखानं घरी येऊ दिलं हे आपलं नशीब म्हणायचं"[2] (उन्हें जुल्म करने के लिए पेशवाई ही क्यों चाहिए ? सिर्फ परछाई से अस्पृश्यता माननेवाले आज भी गुलटेकडी के मैदान में इन्सान को तड़फा-तड़फा कर मार डालते हैं। उनकी राह मत जाना, जीती। उन्होंने तुम्हें सहीसलामत घर जाने दिया यही हमारा नसीब हैं।) इस प्रकार तत्कालीन समय की जाति पाति की कट्टरता का अंकन यहाँ दिखाई देता है।

1. डॉ. रवींद्र ठाकुर : महात्मा, पृष्ठ - 129
2. वही, पृष्ठ - 21

उपन्यास में राजनैतिक स्थिति, सामाजिक स्थिति आदि का चित्रण अत्यंत यथार्थ रूप में उपन्यासकार ने चित्रित किया जो देशकालानुरूप सुसंगत है। स्त्रियों की दुर्गति, जाति पाति की कट्टरता, अंग्रेजों का राज, धर्म की कट्टरता, निम्न वर्ग का शोषण, अनाथ बच्चों की दुर्दशा, सामाजिक यथार्थ आदि बातें देश कालानुरूप प्रस्तुत हुई।

### 5.5 'सूत्रधार' एवं 'महात्मा' का भाषा शिल्प : तुलनात्मक विचार :

प्रत्येक रचनाकार अपनी विशिष्ट शैली विकसित करना चाहता है कारण, 'स्टाइल' या 'शैली' से ही रचनाकार अपनी विशिष्ट अस्मिता पाता है। लेखक का व्यक्तित्व, उसका जीवन सम्बन्धी दृष्टिकोण, भाव, कल्पना, संस्कार, प्रतिभा आदिपर निर्भर होता है। आशय के अनुकूल शैली होने से लेखक प्रतिपादन में प्रभाव एवं सघनता प्राप्त होती है। भाषा मूलत: अपनी अनुभूति एवं संवेदन का माध्यम है जिसका निश्चित सामाजिक आधार होता है। नामवर सिंह के अनुसार, "भाषा संप्रेषण से पहले संवदेन का माध्यम है। इस प्रकार वह हमारे संवेदन का भी नियमन करती है। जिसे हम अपना अनुभव और अपना सन्वेषण समझते हैं उसमें कितना अपना है और कितना सार्वजनिक भाषा का, यह बोध किसी भी विवेकशील व्यक्ति की नींद खो देने के लिए काफी है।"[1] अत: कहना सही होगा कि किसी भी मनुष्य या रचनाकार की मानसिक बुनावट की पहचान उसके द्वारा प्रयुक्त भाषा सम्बन्धी अभिव्यक्ति ही है। इस लिए कृति की सफलता भाषा पर ही निर्भर है।

### 5.5.2 'सूत्रधार' : भाषा -

संजीव ने अपने उपन्यास 'सूत्रधार' में मुख्यत: अरबी, फारशी, संस्कृत, भोजपुरी, अंग्रेजी आदि अनेक भाषाओं का प्रयोग बड़ी ही कलात्मकता के साथ किया हुआ दिखाई देता है। इनकी भाषा में विषयानुकूलता, पात्रानुकूलता, चित्रात्मकता, काव्यात्मकता, संकेतात्मकता आदि अनेक कई प्रयोग दिखाई देते हैं। 'सूत्रधार' की भाषा का विश्लेषण करने पर निम्नलिखित भाषा के अलग-अलग रूप तथा अलग-अलग भाषाओं के शब्द हमें यहाँ प्राप्त होते हैं, वे इस प्रकार हैं -

---

1. नामवरसिंह : वादविवाद, संवाद, पृष्ठ - 23

### 5.5.1.1 संस्कृत शब्दों का प्रयोग :-

'सूत्रधार' में कहीं-कहीं पर संस्कृत शब्दों का प्रयोग किया गया मिलता है। जैसे- "गदहा"[1], "घृणा"[2], "आशीर्वाद"[3], "सुकंठ"[4], "विद्‌वान"[5] आदि। इस प्रकार विवेच्य उपन्यास में संस्कृत शब्द पर्याप्त मात्रा में दिखाई देते हैं।

### 5.5.1.2 अरबी शब्दों का प्रयोग :-

विवेच्य उपन्यास में अरबी शब्दों का भी प्रयोग मिलता है, जैसे - "मूड़"[6], "मरजी"[7], "तकदीर"[8], "सक्ल"[9], "इन्तजाम"[10] आदि। इसप्रकार 'सूत्रधार' में हमें पर्याप्त मात्रा में अरबी शब्द दिखाई देते हैं।

### 5.5.1.3 फारसी शब्दों का प्रयोग :-

विवेच्य उपन्यास में फारसी शब्दों का भी प्रयोग मिलता हैं जैसे - "खरगोश"[11], "दोस्त"[12], "लाश"[13], "शहनशाह"[14], "नामालूम"[15] आदि। इस प्रकार 'सूत्रधार' में फारसी शब्दों का पर्याप्त प्रयोग दिखाई देता है।

### 5.5.1.4 अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग :-

'सूत्रधार' में अंग्रेजी शब्द भी प्रयुक्त हुए हैं, जैसे - "यूनियन"[16], "कैम्प"[17], "मेकअप"[18], "वॉर"[19] आदि। इस प्रकार विवेच्य उपन्यास में अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग दिखाई देता है।

---

1. संजीव - सूत्रधार, पृष्ठ - 17
2. वही, पृष्ठ - 21
3. वही, पृष्ठ -23
4. वही, पृष्ठ - 23
5. वही, पृष्ठ - 23
6. संजीव - सूत्रधार, पृष्ठ - 15
7. वही, पृष्ठ - 20
8. वही, पृष्ठ - 20
9. वही, पृष्ठ - 20
10. वही, पृष्ठ - 29
11. वही, पृष्ठ - 17
12. वही, पृष्ठ - 26
13. वही, पृष्ठ - 54
14. वही, पृष्ठ - 56
15. वही, पृष्ठ - 68
16. वही, पृष्ठ - 177
17. वही, पृष्ठ - 178
18. वही, पृष्ठ - 151
19. वही, पृष्ठ - 179

### 5.5.1.5 मुहावरों, कहावतों का प्रयोग :-

'सूत्रधार' में आम लोगों में प्रचलित मुहावरों और 'कहावतों', का प्रयोग प्रचुर मात्रा में दिखाई देता है। जैसे -

"अंधा क्या मांगे दो नैना।"[1]

"बड़े मियाँ तो बड़े मियाँ छोटे मियाँ सुभान अल्लाह।"[2]

"एक अनार और सौ बीमार।"[3]

इस प्रकार विवेच्य उपन्यास में मुहावरें एवं कहावतों का प्रयोग दिखाई देता है।

### 5.5.2 शैली -

रचनाकार अपनी इच्छित विषयवस्तु के सम्प्रेषण हेतु विभिन्न शैली-रुपों का इस्तेमाल कर लेता है। फ्रांसीसी उपन्यासकार स्टेण्ढल ने शैली को अच्छी रचना का गुण माना है। उनके मतानुसार - "शैली का अस्तित्व इसमें निहित है कि दिये हुए विचार के साथ उन सब परिस्थितियों को जोड़ दिया जाए, जो कि उस विचार के अभिमत प्रभाव को सम्पूर्णता में उत्पन्न करनेवाली हैं।"[4] शैली के विविध प्रयोग से रचना अधिक सफल होती है।

संजीव ने 'सूत्रधार' में शैली के पत्रात्मक, आत्मकथनात्मक, प्रश्नोत्तर, वर्णनात्मक, डायरी, इतिवृत्तात्मक तथा फ्लैशबैक (पूर्वदीप्ति) आदि रूपों का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में किया मिलता है। इन विभिन्न शैलियों में से कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं -

### 5.5.2.1 आत्मकथनात्मक शैली :-

आत्मकथात्मक शैली का तात्पर्य यह है कि कथागत अन्तर्वस्तु प्रथम पुरूष में प्रस्तुत की जाए। उक्त शैली में लेखक वर्णन के माध्यम से अथवा पात्र के दूवारा अपने बारे में कुछ-न-कुछ कहता है। इसके अन्तर्गत व्यक्ति का आत्मविश्लेषण किया जाता है। इसमें चरित्र पर जोर दिया जाता है। 'सूत्रधार' में भिखारी ठाकुर का कथन द्रष्टव्य है - "कन्हैया जी और बलराम अहीर थे - कितने गुमान से बोलता है यह गरीब जगरूप

---

1. संजीव : सूत्रधार, पृष्ठ - 55
2. वही, पृष्ठ - 108
3. वही, पृष्ठ - 236
4. धीरेन्द्र वर्मा : हिंदी साहित्यकोश, भाग-1, पृष्ठ - 681

अहीर जिसकी तीन पुस्त लाला के यहाँ बनिहारी करते बीत गई, पाँव में एक रूपय का जूता तक नसीब नहीं हुआ आज तक जिसे। मैं भला किस नायक पर गुमान करूं ? कहाँ रख दूँ अपनी जातिगत हीनता को ? सबका एक-एक भगवान है, मेरा भगवान कहाँ है ?''[1] उक्त कथन से समझने में देर नहीं लगती कि उपर्युक्त कथन आत्मकथनात्मक का है।

**5.5.2.2 पत्रात्मक शैली :-**

उक्त शैली में लिखित रचनाओं में कथा की योजना का आधार विविध पात्रों द्वारा लिखे गये 'पत्र' होते हैं। 'सूत्रधार' में संजीव ने पत्रात्मक शैली का प्रयोग किया है। जैसे -

''श्री राम जी''

श्री बाबू जगदीशचन्द्र माथुर साहब, चरण कमल में प्रणाम ... हम अपना दल के साथ ता. 25.1.54 के आइब। अपने के चपरासी अइसन मुसकिल कइल कि भेंट ना भइल। हम अपना खरच से आइब। ता. 26.1.54 के रहब।

द. भिखारी ठाकुर
मोकाम कुतुबपुर
पो. कोरवा पट्टीरामपुर
छपरा, हालमोकाम नोखा
पो. नोखा, जिला आटा।''[2]

इस प्रकार पत्रात्मक शैली का प्रयोग भी उपन्यास में हुआ है।

**5.5.2.3 प्रश्नात्क शैली :-**

प्रश्नात्मक में एक-दूसरे से प्रश्न पूछकर उत्तर प्राप्त किए जाते हैं। इस लिए इस शैली को प्रश्नात्मक शैली कहा गया है। जैसे -

''झाँकी से मन भरता हैं। भिखारी ने कहा।''

''पेट नो रामलीला से ही भरेगा, लेकिन कर पाओंगे ?''

''काहें ना ?''[3]

स्पष्ट है कि पत्रात्मक शैली का उक्त संवाद हमें सार्थक रूप में दृष्टिगोचर होता है।

1. संजीव : सूत्रधार, पृष्ठ - 84
2. वही, पृष्ठ - 282
3. वही, पृष्ठ - 48

### 5.5.2.4 वर्णनात्मक शैली :-

वर्णनात्मक शैली में कथानक के स्थान, काल तथा वातावरण का निर्माण करने की सम्भावना अधिक है। वर्णनात्मकता कथा सृजन का अनिवार्य अंग है। इस शैली के दूवारा ही रचनाकार पाठक के मन को आकर्षित, विमोहित द्रवित या आल्हादित करता है। संजीव ने 'सूत्रधार' में वर्णनात्मक शैली प्रचुर मात्रा में प्रस्तुत की है, जैसे -

"तीर पर जो खेत बोए गए थे जिनमें हल्के-हल्के अंकुर आए थे, चले गए गंगा माई के पेट में। पानी घट रहा है तो मुंडित सपाट पंकिल बलुई माटी दिख रही हैं। जाएँ, कहीं से फिर बीया-बिसार ले आएँ। ऊँचास पर बूट बोए थे, वे अपनी नन्हीं-नन्हीं पत्तियाँ के कान खड़े कर आकाश की ओर उमगने लगे हैं। कुछ दिनों में तीखाले खेतों में अनाज के डाभे निकल आते। ऊँट! बीया-बिसार के बारे में बाद में सोचेंगे।"[1] इस प्रकार वर्णनात्मक शैली यहाँ दृष्टिगोचर होती है।

### 5.3.6 'महात्मा' : भाषा शिल्प :-

डॉ. रवींद्र ठाकुर ने 'महात्मा' उपन्यास में सहज सरल एवं सरस भाषा का प्रयोग किया है। जिसमें मुख्यत: मराठी, संस्कृत, अरबी, फारसी, अंग्रेजी आदि अनेक भाषाओं के शब्दों का प्रयोग उन्होंने बड़ी सफलता के साथ किया हैं। डॉ. रवींद्र ठाकुर की भाषा में कलात्मकता, प्रवाहमयता, संक्षिप्तता, सरलता आदि गुण दिखाई देते हैं। 'महात्मा' में भाषा के अलग-अलग रूप तथा अलग-अलग भाषाओं के शब्द प्राप्त होते हैं - वे इस प्रकार हैं -

### 5.3.1 अरबी शब्दों का प्रयोग :-

विवेच्य उपन्यास में अरबी शब्दों का प्रयोग दिखाई देता है, जैसे - "मतलबी"[2], "मर्जी"[3], "इलाज"[4], "हक्क"[5], "काबीज"[6] आदि। इस प्रकार 'महात्मा' में अरबी शब्द पर्याप्त मात्रा में दिखाई देते हैं।

---

1. संजीव : सूत्रधार, पृष्ठ - 57
2. डॉ. रवींद्र ठाकुर : महात्मा, पृष्ठ - 5
3. वही, पृष्ठ - 20
4. वही, पृष्ठ - 34
5. वही, पृष्ठ - 48
6. वही, पृष्ठ - 75

### 5.5.3.2 फारसी शब्दों का प्रयोग :-

महात्मा उपन्यास में फारसी शब्द भी प्रयुक्त हुए हैं जैसे - "शिकस्त"[1], "शागीर्द"[2], "अंदाज"[3], "दुरुस्त"[4], "बरखास्त"[5] आदि। इसप्रकार विवेच्य उपन्यास में फारसी शब्दों का जगह-जगह पर प्रचुर मात्रा में प्रयोग दिखाई देता है।

### 5.5.3.3 संस्कृत शब्दों का प्रयोग :-

'महात्मा' उपन्यास में संस्कृत शब्दों का प्रयोग भी पर्याप्त मात्रा में दिखाई देता है, जैसे - "कुत्सित"[6], "अग्नी"[7], "दु:ख"[8], "आश्चर्य"[9], "मस्तक"[10] आदि। इसप्रकार विवेच्य उपन्यास में संस्कृत शब्दों का प्रयोग भी प्रचुर भाषा में दिखाई देता हैं।

### 5.5.3.4 अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग :-

'महात्मा' उपन्यास में अंग्रेजी शब्द भी प्रयुक्त हुए हैं, जैसे - "वर्ल्ड"[11], "कंट्री"[12], "रिलीजन"[13], "बुक"[14], "ऑफिस"[15] आदि। इस प्रकार विवेच्य उपन्यास में अंग्रेजी शब्दों का जगह-जगह पर प्रयोग किया गया है।

### 5.5.4 शैली (महात्मा) -

डॉ. रवींद्र ठाकुर के 'महात्मा' उपन्यास में हमें विभिन्न शैलियों का प्रयोग मिलता है। इनमें वर्णनात्मक शैली, आत्मकथनात्मक शैली, प्रश्नात्मक शैली, पत्रात्मक शैली, फ्लैशबैंक शैली आदि का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में हुआ है। इनके कुछ उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य हैं -

### 5.5.4.1 प्रश्नात्मक शैली :-

प्रश्नात्मक शैली में संवाद होते हैं, जहाँ प्रश्न पूछकर उत्तर प्राप्त किए जाते हैं तथा मन की शंकाओं का निरसन किया जाता है। जैसे -

---

1. डॉ. रवींद्र ठाकुर : महात्मा, पृष्ठ -3
2. वही, पृष्ठ - 64
3. वही, पृष्ठ - 124
4. वही, पृष्ठ - 200
5. वही, पृष्ठ - 27
6. वही, पृष्ठ - 8
7. वही, पृष्ठ - 23
8. वही, पृष्ठ - 59
9. वही, पृष्ठ - 64
10. वही, पृष्ठ - 25
11. वही, पृष्ठ - 1
12. वही, पृष्ठ - 1
13. वही, पृष्ठ - 1
14. वही, पृष्ठ - 8
15. वही, पृष्ठ - 27

"सीतारामचं लग्न केलंत, आता ग्यानोबाचं कधी करणार ?" यावर तात्या गंमतीने म्हणतं.

"त्याचं लग्नं कशाला ? गेला पुन्हा बैरागी होऊन तर ?"

"लग्न करुन दिल्यावर बरा जाईल ?" ग्यानोबाकडं पाहून काकू म्हणत."[1]
("सीता राम का विवाह कर दिया अब ग्यानोबा का कब करेंगें ?" उस पर तात्या मजाक में कह देते, "उसका विवाह किस लिए ? फिर से बैरागी होकर चला गया तो ?")

"शादी के बाद देखेंगे कैसे जाता है ?" ग्यानोबा की ओर देखकर काकू कह देती।")

### 5.5.4.2 वर्णनात्मक शैली :-

वर्णनात्मक शैली के द्वारा लेखक अपनी बात कर देता है। वर्णन काल्पनिक होकर भी यथार्थ परक महसूस होना चाहिए। वर्णन सामान्य, सांकेतिक, विवरणात्मक और प्रभावात्मक भी हो सकता है। जैसे -

"सर्वत्र अंधार. जीव घुसमटून जावा असा अंधार. कुठं उजेडाची तिरीप नाही, की कुठं चिटपाखरू नाही. पायांखाली विस्तीर्ण उजाड माळरान आणि एकटी, एकाकी, वाटचाल."[2] ("सभी ओर अंधेरा। दम घोट देनेवाला अंधेरा। कहींपर भी धुप की एक रेखा तक नही, कि कहीं पर एक मक्खीं भी नही, पाँव के नीचे विस्तीर्ण, उजड़ा हुआ मैदान और अकेली, एकांकी राह।")

### 5.5.4.3 आत्मकथनात्क शैली :-

आत्मकथनात्मक शैली के अंतर्गत व्यक्ति का आत्म-विश्लेषण किया जाता है। इसमें चरित्र पर जोर दिया जाता है, लेखक के अपने विचार, अनुभव या पृष्ठभूमिका विश्लेषण किया जाता है। 'महात्मा' में यहाँ महात्मा जोतिराव फुलें का कथन द्रष्टव्य हैं -

"त्यांचा आणि माझा धर्म एकच आहे. ते हिन्दू आहेत. तसा मी ही हिंदू आहे. मग मी हीन कसा ? मी ही एक माणूसच आहे ना ? कशाच्या आधारावर ते मला हीन समजतात. कशासाठी मी हा जुलूम सहन करायचा ?"[3] ("उनका और मेरा धर्म एक

---

1. डॉ. रवींद्र ठाकुर : महात्मा, पृष्ठ - 218
2. वही, पृष्ठ - 186
3. वही, पृष्ठ - 20

ही है। वे हिंदू हैं वैसे ही मैं भी हिंदू हूँ। फिर 'मैं' हीन कैसे ? मैं भी इन्सान ही हूँ ? किस आधार पर वे मुझे हीन समझते हैं ? किस लिए मैं यह जुल्म सहन कर लूँ ?")

इस प्रकार विवेच्य उपन्यास में हमें शैली के अलग-अलग प्रयोग दिखाई देते हैं।

## 5.6 'सूत्रधार' एवं 'महात्मा' का उद्देश्य शिल्प : तुलनात्मक विचार :

साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा जीवन और जगत की विविध स्तरीय अनुभूतियों को चित्रित करने का माध्यम उपन्यास ही है। हर उपन्यास की सर्जना के पीछे उसके रचनाकार विशिष्ट उद्देश्य अथवा दृष्टिकोन अवश्य निहित रहा है चाहे वह उद्देश्य मनोरंजन करने का हो या अस्तित्व का बोध कराने का हो। इस विषय में उपन्यास में मनोरंजन आदि उद्देश्य प्रमुख के साथ अब सामाजिक स्थिति, समस्याओं आदि का यथार्थ चित्रण प्रमुख उद्देश्य बनता चल जा रहा हैं। डब्लू.एच.हडसन का कथन द्रष्टव्य है - "Merely by selection and organization of material, emphasis, presentation of character and development of story, the novelist shows us in a general way what he thinks abount life."[1]

उपन्यास का सोद्देश्य होना वर्तमान युग की मांग है और कलात्मक दृष्टि से उद्देश्य को व्यंजित करना उपन्यासकार के शिल्प विधि की कसौटी है।

'सूत्रधार' और 'महात्मा' उपन्यास में तत्कालीन सामाजिक परिस्थिति, उपन्यास के प्रमुख चरित्र भिखारी ठाकुर एवं महात्मा जोतिराव फुलें दोनों का चरित्रोत्घाटन करना, राजनीतिक स्थिति, ऐतिहासिक स्थिति आदि का चित्रण किया दिखाई देता है। दोनों पात्रों ने जीर्ण समाज की रूढ़ियों को तोड़कर नये आदर्श प्रस्थापित करने के जो प्रयास किए, उसमें उन्हें मिली सफलता, उनके विचार आदि से लोगों को फिर से परिचित कराना ही इन उपन्यासों का प्रधान प्रतिपाद्य है।

1. डब्ल्यू.एच्.हडसन : ॲन इंट्रोडक्शन टू द स्टडी ऑफ लिटरेचर, पृष्ठ - 165

### 5.6.1 उद्देश्य : 'सूत्रधार' :-

'सूत्रधार' संजीव का नया उपन्यास उनकी शोधपरक कथा-यात्रा में नितांत चुनौती पूर्ण भी। केन्द्र में हैं भोजपुरी गीत-संगीत और लोकनाटय के अनूठे सूत्रधार भिखारी ठाकुर। वही भिखारी ठाकुर, जिन्हें महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन ने 'भोजपुरी का शेक्सपीयर' कहा था और उनके अभिनंदन कर्ताओं ने भारतेन्दु हरिश्चंद्र। भिखारी ठाकुर क्या सिर्फ यही थे ? निश्चय ही नहीं, क्योंकि कोई भी एक बड़ा किसी दूसरे बड़े के समकक्ष नहीं हो सकता। यों भी भिखारी का बड़प्पन उनके सहज सामान्य होने में निहित था, जिसे इस उपन्यास में संजीव ने उन्हीं के आत्मद्वंद्व से गुजरते हुए चित्रित किया है।

उपन्यास में मुख्यत: भिखारी के जीवन की कहानी के साथ जातीय संस्कृति, इतिहास और साहित्य का चित्रण करना, सदी पूर्व के जीवन, इतिहास, संस्कृति, कला, शोषण, निरुपायता, अपने अस्तित्व की लड़ाई, तत्कालीन सामंती सामाजिक व्यवस्था की गहरी पड़ताल, नाई जांति में पैदा हुए भिखारी का पग-पग होता अपमान, समाज की चोटों का संघर्ष, इस सबमें सदैव संस्कारवश रहने की अपनी जिम्मेदारी निभाना, एक तरफ परिवार का नाच के लिए होता रहा विरोध दूसरी ओर समाज मे दल को लोकप्रियता के साथ परिष्कृत करने का संघर्ष, मंडली से नचनियों, गवैओं को जोड़े रखने का संघर्ष, बात-बात पर ऊँच-नीच और जातिगत स्वाभिमान की लड़ाई, नाच को सच से जोड़कर सामाजिक परिवर्तन के हथियार में बदल दिया, अपनी लाचार और परवश जिन्दगी से छूटने और आसमान छूने की भिखारी आकांक्षा, स्वयं तुटकर समाज के दर्प को भी तोड़ने की कोशिश, अपने तमाम शिखरारोहण के बावजूद भिखारी अंत तक भिखारी ही बने रहे आदि अनेक प्रकार के उद्देश्यों को सामने रखकर संजीव ने इस उपन्यास की निर्मिति की है।

भिखारी ठाकुर के संपूर्ण चरित्र को वहाँ के संस्कृति, इतिहास के साथ प्रस्तुत करना ही उपन्यासकार का प्रमुख उद्देश्य है। लोकचेतना में व्यस्त नवजागरण के स्वर के पकड़ना, वह विलक्षणता, वह जद्दोजहद पकड़ना, लोकचेतना के सार्थवाह उस कलाकार की ओर व्यापक जनसमुदाय का ध्यान खींचना, यह भी प्रमुख उद्देश्य रहा है।

### 5.6.2 उद्देश्य (महात्मा) -

डॉ. रवींद्र ठाकुर का 'महात्मा' महात्मा जोतिराव फुले पर केंद्रित उपन्यास बहुआयामी उद्देश्यों को प्रस्तुत करता है। उपन्यास में फुले के समग्र विचारों, सर्वस्पर्शी व्यक्तित्व और कुल मिलाकर उनके जीवनकार्य को चरित के द्वारा प्रस्तुत करना लेखक का प्रमुख उद्देश्य रहा है।

महात्मा जोतिराव के मन में सामाजिक परिवर्तन की आकांक्षा, टॉमस पेन के विचारों का प्रभाव, बारात में हुए अपमान से सामाजिक परिवर्तन की जंगी आकांक्षा, दलितों के बच्चों के लिए स्कूल खुलवाना, अनाथ बच्चों के लिए अनाथालयों की स्थापना, किसान आंदोलन, स्त्री शिक्षा का महान कार्य विधवा पुनर्विवाह को किया। प्रोत्साहन, अकालग्रस्तों के लिए किया कार्य, अस्पृश्यता निवारण का कार्य, बालकहत्या प्रतिबंधकगृह की स्थापना, सत्यशोधक समाज की स्थापना, एक पत्रका, लेखक, कवि होने का अपना दायित्व, बीमारी की स्थिति में भी अपना कार्य करने की जिजीविषा, समाज का होता कड़ा विरोध, अनेक कष्टों को सहते हुए आजीवन किया संघर्ष, और इस स्थिति से जूझते हुए जीवन का अंत, समाज का प्रवाह मोड देने की ताकद, एक आम सामान्य व्यक्ति का 'महात्मा' पद तक का सफर आदि को प्रस्तुत करना आदि अनेक उद्देश्यों को सामने रखकर इस उपन्यास की निर्मिति की है।

## 5.7 विवेच्य उपन्यासों का तुलनात्मक मूल्यांकन :

संजीव के 'सूत्रधार' एवं डॉ. रवींद्र ठाकुर के 'महात्मा' इन दोनों उपन्यासों का औपन्यासिक कला के आधार पर यहाँ तुलनात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत किया है जिसमें उपन्यास के छ: तत्वों के आधार पर विचेच्य उपन्यासों का तुलनात्मक मूल्यांकन हमने देखा है। दोनों रचनाकारों ने कथा शिल्प संयोजना के लिए कल्पना का अत्यल्प प्रयोग किया है। दोनों के पात्र समाज की जीर्न रूढ़ियों को तोड़कर नये आदर्श प्रस्थापित करने के लिए आजीवन प्रयत्नशील रहे हैं। यथार्थवादी आदर्श पात्रों की सृष्टि की है। कथानक को आगे बढ़ाने तथा चरित्र का उद्घाटन करने हेतु संवादों को आधार बनाया है। दोनों के वातावरण के अंतर्गत भारतीय संस्कृति के अनुकूल लोकगीत, लोककथा, तीज-त्यौहार,

उत्सव-पर्व, रूढि एवं परंपरा, अंधविश्वास, विविध संस्कार, पूजा-पाठ, व्रत तथा मनोरंजन के साथ भारतीय गांवों की सामाजिक प्राकृतिक, राजनीतिक वातावरण की सुंदर अभिव्यक्ति की है। दोनों का साहित्य उद्देश्यपूर्ण रहा हैं। मुख्य चरित्र भिखारी ठाकुर एवं महात्मा जोतिराव फुले के चरित्र को आज के लोगों के सामने प्रस्तुत करना उनका प्रमुख उद्देश्य हैं। दोनों उपन्यासों के समन्वित मूल्यांकन में कुछ निष्कर्ष : साम्य-वैषम्य हैं, जिस पर नजर डालना महत्त्वपूर्ण है।

**5.7.1 साम्य -**

1. संजीव एवं डॉ. रवींद्र ठाकुर ने क्रमशः 'सूत्रधार' एवं 'महात्मा' में औपन्यासिक कला के अंतर्गत कथावस्तु, चरित्रचित्रण, संवाद, देशकाल वातावरण, भाषा शिल्प एवं उद्देश्य आदि तत्वों का प्रयोग सफलता से किया हुआ दिखाई देता है।
2. दोनों के उपन्यासों के नायक तत्कालीन समय में जीर्ण रूढ़ियों को तोड़कर नये आदर्श की प्रस्थापना करते हैं।
3. दोनों के पात्र यथार्थवादी एवं आदर्शवादी हैं।
4. संवाद पात्र और प्रसंग के अनुकूल तथा उचित वातावरण की सृष्टि करते हैं। दोनों के संवाद जीवित, सरल, स्पष्ट, गतिशील, संक्षिप्त, प्रतीकात्मक तथा अर्थपूर्ण होकर उनसे जीवन की अभिव्यक्ति ध्वनित होती है।
5. दोनों उपन्यास में अरबी, फारसी, संस्कृत, अंग्रेजी, शब्दों का प्रयोग सफलता पूर्वक हुआ है।
6. दोनों ने वातावरण के अंतर्गत भारतीय संस्कृति, इतिहास, रूढ़ि-परंपरा, के साथ सामाजिक, प्राकृतिक, राजनीतिक वातावरण की सुंदर अभिव्यक्ति की है।
7. दोनों उपन्यासकारों ने आत्मकथात्मक, वर्णनात्मक, प्रश्नात्मक, पत्रात्मक आदि शैलियों का प्रयोग किया है।
8. दोनों उपन्यास उद्देश्यपूर्ण हैं। साहित्य का समग्रता के साथ विचार किया जाए तो भारतीय गांवों की सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथ आर्थिक स्थिति का दर्शन यहाँ होता है।
9. दोनों के शीर्षक संक्षिप्त, आकर्षक तथा विषयानुरूप हैं।

दोनों उपन्यासकारों के औपन्यासिक कला का अध्ययन करने के पश्चात जो वैषम्य दिखाई देते हैं, वे इस प्रकार हैं -

**5.7.2 वैषम्य -**

1. संजीव के 'सूत्रधार' में प्रकृति चित्रण डॉ. रवींद्र ठाकुर के 'महात्मा' की तुलना में अधिक है।
2. भाषा की दृष्टि से 'सूत्रधार' का सांस्कृतिक महत्त्व अधिक है, जिसमें भोजपुरी के विशाल भाषा वैभव के कई शब्द हैं जो हिंदी में नहीं हैं।

**निष्कर्ष :**

निष्कर्षत: कहना होगा कि विवेच्य दोनों उपन्यास के औपन्यासिक शिल्प गठन में हमें साम्य दिखाई देता है। कथा शिल्प के अंतर्गत दोनों उपन्यास चरित्र प्रधान होने के कारण 'सूत्रधार' में भिखारी ठाकुर का और 'महात्मा' में महात्मा जोतिराव फुले का चरित्रोत्घाटन यहाँ हुआ है। जहाँ कल्पना का प्रयोग अत्यल्प हुआ है। पात्रों के चरित्र की कई विशेषताएँ यहाँ प्रस्तुत हुई हैं। संवादों की दृष्टि से दोनों उपन्यास में संक्षिप्त, रोचक, चरित्रोत्घाटन करनेवाले, सरल संवादों का चित्रण हुआ है। संवाद पात्र और प्रसंगानुरूप हैं। वातावरण की दृष्टि से सामाजिक, प्राकृतिक, राजनीतिक वातावरण की सुंदर अभिव्यक्ति दोनों उपन्यासों में हमें देखने को मिलती है। दोनों रचनाकारों का साहित्य अत्यंत उद्देश्यपूर्ण है। दोनों ने अपने-अपने चरित्रों को लोगों के सामने लाने का यथार्थ प्रयास किया है। शैली में आत्मकथनात्मक, वर्णनात्मक, भावात्मक तथा पत्रशैली का प्रयोग हुआ है। दोनों उपन्यासों के शीर्षक सार्थक एवं अर्थगर्भित हैं।

उपन्यासों का औपन्यासिक कला के आधारपर तुलनात्मक मूल्यांकन से स्पष्ट हो जाता है कि कलात्मकता की दृष्टि से दोनों उपन्यास सफल एवं श्रेष्ठ हैं।

* * * *